



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय/A Central University)

शोध पत्रिका “सागरिका” हेतु विस्तृत अद्यतन नियमावली

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-2025 के अनुरूप)

यह नियमावली विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-2025 के नवीनतम दिशानिर्देशों के अनुरूप तैयार की गई है। इसका उद्देश्य पत्रिका के प्रकाशन, समीक्षा, नैतिकता, गुणवत्ता और दृश्यता से संबंधित सभी पहलुओं को स्पष्ट और पारदर्शी रूप से परिभाषित करना है। इस नियमावली में उल्लिखित मानक सागरिका पत्रिका को उच्च गुणवत्ता, शोध-केंद्रित और अकादमिक दृष्टि से मान्यता प्राप्त बनाने में सहायक हैं।

यह दिशा-निर्देश, लेखकों, शोधकर्ताओं, सम्पादक मण्डल बोर्ड और पाठकों के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है तथा पत्रिका के प्रकाशन में पारदर्शिता, गुणवत्ता और नियमितता सुनिश्चित करता है।

इस दस्तावेज़ में सभी प्रमुख मानक और उनके विवरण निम्नानुसार हैं:

समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिका (Peer-Reviewed Research Journal) – प्रारंभिक मानदंड-

1. पत्रिका का शीर्षक (Journal Title) :

- पत्रिका का नाम “सागरिका”।

1.1. ISSN संख्या (ISSN Number)

- “सागरिका” शोध पत्रिका का ISSN संख्या-2229-5577 है।
- ISSN संख्या पत्रिका के सभी अंकों पर स्पष्ट रूप से प्रकाशित है।

1.2. प्रकाशन आवृत्ति और निरंतरता (Periodicity and Continuity)

- “सागरिका” पत्रिका एक त्रैमासिक शोध पत्रिका है।
- पत्रिका नियत समय पर नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है, जिससे अनुसंधान कार्य में निरंतरता बनी रहती है।
- शोधकर्ताओं और पाठकों के लिए उपलब्धता सुनिश्चित होती है।

1.3. संपर्क और प्रकाशक विवरण (Contact and Publication Details)

पत्रिका के प्रकाशक और संपादकीय कार्यालय की जानकारी:-

- प्रकाशक: सागरिका समिति संस्कृत विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश -470003

- सम्पर्क सूत्र :- संस्कृत विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश - 470003
- संपर्क ईमेल: dhsgsusagarika@gmail.com
- संपर्क फोन: 07582-265833
- यह जानकारी पत्रिका की वेबसाइट पर स्पष्ट रूप से उपलब्ध है, जिससे पाठक और लेखक संपर्क कर सकते हैं।

1.4. पारदर्शी समीक्षा नीति (Transparent Review Policy)

- सभी शोध लेख पीयर-रिव्यू (Peer Review) द्वारा परीक्षणीय होते हैं।
- शोध लेखों का परीक्षण व निरीक्षण गोपनीय स्तर पर होता है।
- समीक्षित लेख सूचना, लेखकों को प्रेषित की जाती है।
- समीक्षा रिपोर्ट तक लेखक की पहुँच।
- उपर्युक्त नीति पत्रिका की वेबसाइट पर स्पष्ट रूप से उपलब्ध है।

1.5. प्रमाणित डोमेन पर वेबसाइट (Website on a Certified Domain)

- “सागरिका” पत्रिका की वेबसाइट विश्वसनीय और सुरक्षित डोमेन dhsgsu.edu.in/index.php/en/about-us/pub-2/sagriika-sans पर संचालित होती है।
- वेबसाइट का प्रबंधन यथासमय तथा सुव्यवस्थित रूप से किया जाता है जिसका प्रयोग उपयोगकर्ता सरल रूप से यथा समय कर सके।
- सभी सामग्री, अंक, और प्रकाशन सूचना वेबसाइट पर सुलभ हैं।

1.6 सर्वसुलभता अथवा सदस्यता हेतु आधारित नीति (Open Access /Subscription Based Policy)

पत्रिका की प्राप्तव्य नीति स्पष्ट रूप से निर्देशित है:-

- सर्वसुलभता (Open Access): सभी लेख शोधकर्ताओं और पाठकों के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं।
- सदस्यता नीति (Subscription Based): सदस्यता शुल्क और उसके नियम स्पष्ट रूप से उल्लिखित किये जाते हैं।

1.7. राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सूचीबद्ध पत्रिकाओं के साथ एकीकरण (Integration with National/International Repositories)

- “सागरिका” की सामग्री राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्बद्ध पत्रिकाओं में सूचीबद्ध की जाएगी।
- उदाहरण: ONOS या अन्य मान्यता प्राप्त शैक्षिक/शोध भंडार।

- यह पत्रिका की दृश्यता और उत्कृष्टता बढ़ाने में सहायक होगा।

1.8. अभिलेखीय नीति (Archival Policy)

- सभी पिछले अंक और प्रकाशित लेख सुरक्षित और व्यवस्थित रूप से संग्रहित किए जाते हैं।
- शोधकर्ता और पाठक सभी पिछले अंक तक आसानी से पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।
- डिजिटल और प्रिंट दोनों प्रारूपों में अभिलेख सुरक्षित रखे जाते हैं।

2. संपादकीय मण्डल (Editorial Board Criteria) :

2.1 संपादक मण्डल विवरण (Editorial Board Details)

- पत्रिका के सभी संपादकीय मण्डल सदस्यों के नाम, उनकी विशेषज्ञता एवं उनकी संस्थागत संबद्धता पत्रिका के प्रत्येक अंक में निरन्तर उल्लिखित किये जाते हैं।
- यह पारदर्शिता सुनिश्चित करती है कि शोधकर्ता और पाठक जान सकें कि लेखों का मूल्यांकन योग्य और अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा किया जा रहा है।

2.2 संपादकीय मण्डल संरचना (Editorial Board Composition)

- मण्डल में विभिन्न विषय विशेषज्ञ, वरिष्ठ विद्वान् और अनुसंधानकर्ता हैं।
- बोर्ड में ऐसे विद्वान विद्यमान हैं जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं।
- बोर्ड की संरचना यह सुनिश्चित करती है कि सभी विषयों का समावेशीकरण और व्यापक प्रतिनिधित्व हो, जिससे शोध के प्रत्येक क्षेत्र की समीक्षा योग्यतापूर्ण और निष्पक्ष हो।
- बोर्ड में नए विशेषज्ञों की नियुक्ति समय-समय पर समीक्षा के आधार पर की जाती है।

2.3 प्रभावी सम्पादन/समीक्षा प्रक्रिया (Efficient Editorial / Review Process)

- सभी प्रस्तुत शोध लेखों का समीक्षा समिति द्वारा निर्धारित (Rigorous Peer Review) प्रक्रिया के माध्यम से निष्पक्ष सम्पादन किया जाता है।
- समीक्षा प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया जाता है कि समीक्षकों के निर्णयों को सर्वमान्य किया जाये।
- लेखकों को समीक्षा के पश्चात् निश्चित समय-सीमा (Timelines) पर प्रतिक्रिया दी जाती है।
- सम्पादक मण्डल समीक्षा प्रक्रिया की गुणवत्ता और निष्पक्षता को नियमानुरूप दृष्टिगत करता है।
- इस प्रणाली से पत्रिका में उच्च गुणवत्ता और शोध-केंद्रित प्रकाशन सुनिश्चित होता है।
- किसी भी लेखक का लेख निरन्तरता से प्रकाशित नहीं किया जायेगा।
- शोधालेखों की पुनरावृत्ति न हो इसकी जिम्मेदारी सम्पादक मण्डल की होगी।
- पत्रिका के प्रकाशनार्थ प्रेषित शोधालेख मूल्यांकन समिति की अनुशंसा के आधार पर ही प्रकाशित किया जाएगा।

3. सागरिका – संपादकीय नीति (Journal Editorial Policy) :

3.1 उद्देश्य, लक्ष्य और क्षेत्र (Aims, Objectives, and Scope)

उद्देश्य -

- पीयर रिव्यूड शोध पत्रिका (Peer Reviewed Research Journal) “सागरिका” का उद्देश्य संस्कृत भाषा एवं वेद, पुराण, स्मृति, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले शोध लेख प्रकाशित करना है।

लक्ष्य -

- शोधकर्ताओं को संस्कृत और संबंधित विषयों में प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करना।
- उच्च गुणवत्ता वाले शोध और समीक्षा लेखों को व्यापक रूप में पाठक समुदाय तक पहुँचाना।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत अनुसंधान को बढ़ावा देना।

क्षेत्र -

- संस्कृत वाङ्मय
- भारतीय ज्ञान परंपरा से सम्बन्धित सभी विषय
- अनुसन्धेय सभी क्षेत्र

3.2 विषय क्षेत्र (Subject Areas)

“सागरिका” निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में शोध प्रकाशित करती है:-

- वैदिक वाङ्मय (वेद, स्मृति, दर्शन, वेदांग, आर्षग्रन्थ आदि)
- संस्कृत साहित्य (रामायण, महाभारत, काव्य साहित्य, नाटक आदि)
- भारतीय ज्ञान परंपरा अनुगामी विषय
- अन्य संबंधित अनुसंधान विषय, जो पत्रिका के उद्देश्य और क्षेत्र से संबंधित हों।

3.3 लेख प्रकाशन शुल्क (Article Processing Charges – APC)

- “सागरिका” निःशुल्क शोध पत्रिका है। किसी भी लेख के प्रकाशन हेतु लेखक से प्रक्रिया शुल्क नहीं लिया जाता है।
- यदि लेखक हार्ड कॉपी प्राप्त करना चाहते हैं, तो डाक खर्च के रूप में ₹100 का सहयोग राशि के रूप में लिया जाता है।
- अन्तराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित संस्कृत के विद्वानों, प्राध्यापकों, देश के महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों, संस्कृत संस्थानों, उच्च सस्थाओं के कुलपति, पुस्तकालयों एवं विभागों के लिए निःशुल्क सम्मानार्थ पत्रिका भेजी जाएगी। साथ ही विभागाध्यक्षों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों से इस पत्रिका को क्रय करने के लिए अनुरोध पत्र भेजा जाएगा।

- प्रधान सम्पादक, सम्पादक, प्रबन्ध सम्पादक, सम्पादक मण्डल, विभागीय अध्यापक तथा इस विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, केन्द्रीय पुस्तकालय, राजभाषा प्रकोष्ठ को भी एक-एक प्रति निःशुल्क दी जाएगी।
- पत्रिका के आवरण चित्र के डिजाइन के लिए विश्वविद्यालय परिसर से बाहर के किसी व्यक्ति अथवा संस्था से सदस्यता समिति द्वारा निर्धारित न्यूनतम पारिश्रमिक के आधार पर ली जा सकती है क्योंकि पत्रिका निःशुल्क है किन्तु अर्थसापेक्ष हार्डकापी प्रकाशित हेतु यदि सागरिका पत्रिका का कोई संस्था, संगठन अथवा व्यक्तिगत सहयोग करता है/ करना चाहता है तो उसका अपेक्षित विवरण इस पत्रिका में दिया जा सकता है।
- सागर केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थित भारतीय स्टेट बैंक में सागरिका समिति का खाता क्रमांक 35719096312 है।
- पत्रिका की सदस्यता-
 वार्षिक सदस्यता- 600/-
 प्रति अङ्क - 250/-
- सागरिका का सम्पादन एवं प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक है।

3.4 प्रकाशन समय-सीमा (Publishing Timeline)

- पत्रिका त्रैमासिक होने के कारण, सभी लेखों की समीक्षा और प्रकाशन प्रक्रिया समयबद्ध होती है।

सम्भावित समय :

- सम्पादक मण्डल द्वारा निश्चित तिथि तक प्राप्त शोधलेख 1 माह के अन्दर समीक्षा समिति द्वारा निर्णीत कर लिये जाते हैं।
- यह समय-सीमा लेखकों और शोधकर्ताओं के लिए स्पष्ट और पूर्वानुमानित है।

3.5 स्वीकार्यता दर (Acceptance Rate)

- सभी प्रस्तुत शोधलेख समीक्षा प्रक्रिया से गुजरते हैं।
- औसत स्वीकृति दर लगभग 50-60 प्रतिशत है (समीक्षा की गुणवत्ता और पत्रिका के मानकों के आधार पर)। यह सुनिश्चित करता है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख उच्च गुणवत्ता और शोध-केंद्रित हों।

4. सागरिका – पत्रिका गुणवत्ता मानदंड (Journal Quality Criteria – Content) :

4.1 अकादमिक योगदान (Academic Contribution)

- “सागरिका” में प्रकाशित लेखों का मुख्य उद्देश्य मौलिक अकादमिक योगदान सुनिश्चित करना है।

प्रत्येक शोधलेख में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:-

- अनुसंधान प्रेरणा और उद्देश्य (Motivation): लेख स्पष्ट रूप से यह बताता है कि यह शोध क्यों महत्वपूर्ण है।
- प्रत्येक आलेख मौलिक होना चाहिए।
- वर्तमान ज्ञान में उन्नति (Advancement of Existing Knowledge): लेख विद्यमान शोध को विस्तारित, चुनौतीपूर्ण या नया दृष्टिकोण प्रदान करता हो।
- नीति निर्धारण और व्यावहारिक उपयोगिता (Applicability for Policy-making / Practice): लेख में परिणामों का शैक्षिक, सामाजिक या सांस्कृतिक नीति निर्धारण में प्रयोग या योगदान दिखाई दे।
- यह सुनिश्चित करता है कि पत्रिका केवल उच्च गुणवत्ता वाले और प्रभावशाली शोध प्रकाशित करे।

4.2 पत्रिका की अनुरूपता (Conformity to Journal Scope)

- सभी प्रकाशित लेख सागरिका के उद्देश्यों और विषय क्षेत्र (Scope) के अनुरूप होने चाहिए।

5. सागरिका – पत्रिका मानक (Journal Standards) :

5.1 ग्रंथ-सूची और साहित्य उद्धरण (Bibliographic Data & Literature Citation)

- सभी शोध लेखों में सटीक और मानकीकृत संदर्भ प्रणाली का पालन किया जाता है।
- संदर्भ सूची MLA शैली या सम्पादक मण्डल द्वारा निर्धारित शैली के अनुसार व्यवस्थित की जाती है।
- यह सुनिश्चित करता है कि पाठक और शोधकर्ता संदर्भों तक आसानी से पहुँच सकें और अनुसंधान की पारदर्शिता बनी रहे।

5.2 फॉन्ट और डिज़ाइन (Font and Design)

- शोध आलेख यूनिकोड फ़ॉन्ट, आकार 14, पृष्ठ A4 आकार, शब्द सीमा- 1500-3000 शब्दों में होना चाहिए और शीर्षक संरचना अकादमिक मानकों के अनुरूप हैं।

5.3 ग्राफिक्स और प्रदर्शन सामग्री (Infographics and Exhibits)

1. सभी चित्र, तालिकाएँ, आरेख और अन्य सहायक सामग्री उच्च गुणवत्ता वाली और स्पष्ट हो।
2. लेखों में प्रयुक्त सहायक सामग्री विषय को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करती हो।
3. डिजिटल प्रकाशन में भी इनका स्वरूप आकर्षक और सुपाठ्य होता है।

5.4 उद्धरण रिकॉर्ड (Citation Record)

- “सागरिका” में प्रकाशित लेखों का उद्धरण रिकॉर्ड प्रमुख और प्रतिष्ठित डेटाबेस में सुरक्षित रखा जाता है।

- इसका उद्देश्य पत्रिका के शोध प्रभाव और दृश्यता को बढ़ाना है।

5.5 प्रिंट निरंतरता (Print Continuum)

- “सागरिका” पत्रिका का प्रिंट संस्करण है, अतः सभी अंक नियत समय पर और लगातार प्रकाशित किए जाते हैं।
- “सागरिका” पत्रिका के प्रत्येक अंक का प्रकाशन प्रिंट संस्करण में किया जाता है।
- सभी अंक त्रैमासिक नियत समय पर नियमित रूप से प्रकाशित किए जाते हैं।
- यह सुनिश्चित करता है कि पत्रिका विश्वसनीय, समयबद्ध और नियमित रूप से पाठकों तक उपलब्ध हो।

5.6 वेबसाइट की गुणवत्ता (Quality of Website)

- पत्रिका की वेबसाइट सुव्यवस्थित रूप से प्रबंधित, नियमित रूप से अद्यतनता प्राप्त और उपयोगकर्ता सुलभ है।
- वेबसाइट पर सभी अंक, प्रकाशन सूचना और लेखक/पाठक निर्देश सुलभ और स्पष्ट रूप से उपलब्ध हैं।
- डिजिटल प्रकाशन के लिए वेबसाइट का सुरक्षा मानक HTTPS और प्रमाणित डोमेन के अनुसार है।

5.7 बहुभाषीय उपलब्धता (Multilingual Availability)

- पत्रिका भारतीय संदर्भ में बहुभाषीय उपयुक्तता को ध्यान में रखती है।
- मुख्य रूप से संस्कृत में प्रकाशित, लेकिन आवश्यकतानुसार अन्य भारतीय भाषाओं में सारांश / सामग्री व सन्दर्भ उपलब्ध हो सकते हैं।
- यह भारत में अनुसंधान की व्यापक पहुँच और उपयोगिता सुनिश्चित करती है।

6. सागरिका – अनुसंधान नैतिकता (Research Ethics) :

6.1 लेखकों के लिए नैतिक दिशा-निर्देश (Ethical Guidelines for Authors)

- सभी लेखकों को पारदर्शी, निष्पक्ष और उच्च नैतिक मानकों के अनुसार लेख प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।
- लेखकों को निम्नलिखित का पालन करना अनिवार्य है:
- शोध का मौलिक होना और किसी अन्य शोधकर्ता के काम की चोरी न होना।
- सभी स्रोतों और संदर्भों का सही उद्धरण करना।
- शोध में प्रयुक्त डेटा और प्रमाणों की सत्यता सुनिश्चित करना।
- यह नीति सुनिश्चित करती है कि सागरिका में प्रकाशित सभी लेख नैतिक और विश्वसनीय हों।

6.2 साहित्यिक चोरी रोकथाम (Plagiarism Prevention)

- सभी प्रस्तुत लेखों को समानता जाँच (Similarity Check) की प्रक्रिया से गुजारा जाता है।
- स्वीकार्य समानता प्रतिशत विश्वाविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) मानकों के अनुरूप होना चाहिए।
- यदि कोई लेख मानक सीमा से अधिक समानता दिखाता है, तो उसे अस्वीकृत या संशोधन हेतु लौटाया जा सकता है।

6.3 हितों के टकराव का प्रकटीकरण (Conflict of Interest Disclosure)

- संपादकीय मण्डल, समीक्षा समिति और लेखकों के बीच किसी भी प्रकार के हितों के टकराव की जानकारी स्पष्ट रूप से प्रकट की जाएगी।
- यह नीति पत्रिका की पारदर्शिता और निष्पक्षता को सुनिश्चित करती है।

6.4 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सामग्री नीति (AI Generated Content Policy)

- “सागरिका” में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) या अन्य डिजिटल उपकरणों द्वारा उत्पादित सामग्री के उपयोग के लिए स्पष्ट नीति लागू है।
- लेख में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जनित सामग्री का स्पष्ट उल्लेख अनिवार्य है।
- संपादकीय मण्डल यह सुनिश्चित करता है कि AI-जनित सामग्री सटीक, शोध-केंद्रित और नैतिक रूप से उपयुक्त हो।

7. सागरिका – पत्रिका दृश्यता (Journal Visibility) :

7.1 प्रभाव सूचकांक या समकक्ष मानक (Impact Factor or Similar Factor)

- वर्तमान में सागरिका का कोई आधिकारिक Impact Factor नहीं है।
- भविष्य में पत्रिका की गुणवत्ता, उद्धरण और अनुसंधान योगदान के आधार पर इसे प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा।
- Impact Factor की अनुपस्थिति के बावजूद, पत्रिका उच्च गुणवत्ता वाले शोध प्रकाशन और व्यापक अनुसंधान योगदान पर केंद्रित है।

7.2 प्रतिष्ठित डेटाबेस में सूचीबद्धता (Indexation in Reputed Databases)

- “सागरिका” पत्रिका को राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित डेटाबेस में सूचीबद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है।
- लक्ष्य है कि पत्रिका की सामग्री सुलभ, उद्धृत और शोध समुदाय के लिए उपलब्ध हो।
- सूचीबद्धता से पत्रिका की दृश्यता, उद्धरण दर और शोध प्रभाव बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- यह नीति पत्रिका के शोध गुणवत्ता मानकों और नैतिक प्रकाशन प्रक्रियाओं के अनुरूप है।

8. सागरिका – पत्रिका प्रभाव मानदंड (Journal Impact Criteria) :

8.1 आत्म-उद्धरण स्कोर (Self-Citation Score)

- वर्तमान में पत्रिका का विशिष्ट Self-Citation Score उपलब्ध नहीं है।
- भविष्य में, यह स्कोर समान क्षेत्र की समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाओं के मानकों के अनुसार बनाए रखा जाएगा।
- यह नीति यह सुनिश्चित करती है कि पत्रिका स्वयं के उद्धरण के माध्यम से कृत्रिम रूप से प्रभाव न बढ़ाए।

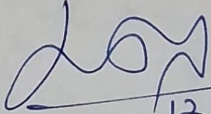
8.2 कुल उद्धरण दर (Total Citation Rate)

- वर्तमान में इसकी तुलना समान विषय क्षेत्र की अन्य सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं से नहीं की गई है, लेकिन भविष्य में इसे मानक तुलनात्मक अध्ययन के अनुसार सुनिश्चित किया जाएगा।
- इसका उद्देश्य पत्रिका की शोध गुणवत्ता और प्रभावशीलता को मापना है।

8.3 साइट स्कोर (Cite Score)

- “सागरिका” का Cite Score अभी उपलब्ध नहीं है।
- भविष्य में पत्रिका के उद्धरण रिकॉर्ड और डेटाबेस सूचीबद्धता के आधार पर Cite Score प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा।
- Cite Score का उल्लेख करने का उद्देश्य पत्रिका के शोध प्रभाव और वैश्विक दृश्यता को दर्शाना है।

* समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र सागर, मध्यप्रदेश होगा।


12/01/2026
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
Head, Dept. of Sanskrit
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
Dr. Hari Singh Gour V. V. Sagar